

समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ सितम्बर २०२२ ● वर्ष : २६ ● अंक : ३ (निरंतर अंक : ३०३) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)



आप ऐसी दिवाली मनाओ जो आपको रसमय बनाये। ऐसी मिठाई खाओ जो वसिष्ठजी, वेदव्यासजी, साँई श्री लीलाशाहजी बापू आदि हलवाइयों ने बनायी है। जरा-सी तो हमने भी खायी... कब खायी ?

आसोज सुद दो दिवस, संवत् बीस इक्कीस ।...

शाश्वत मिठाई (आत्म-प्रसाद) का लक्ष्य रखकर जो गुरुद्वार या मंदिरों में जाते हैं उन्हें सूक्ष्म दृष्टिसम्पन्न होकर आधिभौतिक में से आत्मलाभ पाने की कोशिश करनी चाहिए।

दीपावली पर्व : २२ से २६ अक्टूबर

- पूज्य बापूजी

सरस्वती-पूजन

विद्या मिले पर वह विद्या सिर्फ पेट भरने की विद्या नहीं, ऐहिक विद्या के साथ आपके चित्त में विनय आये, आपके जीवन में ब्रह्मविद्या आये।



लक्ष्मी-पूजन

गणेशजी का पूजन

समृद्धि के साथ सदबुद्धि (आत्म विषयिणी बुद्धि), सद्ज्ञान एवं इन्द्रिय-संयम की प्राप्ति हो।

धन या लक्ष्मी का तिरस्कार नहीं किंतु जिसे पाकर असुरों जैसा जीवन जियें ऐसा वित्त, ऐसा धन, ऐसी लक्ष्मी नहीं बल्कि ऐसा धन, ऐसी लक्ष्मी - महालक्ष्मी की प्राप्ति जो ईश्वर की ओर स्वयं जाने एवं दूसरों को ले जाने वाले दैवी कार्यों में लगे, नारायण से मिला दे।

दीपावली पर गणेशजी, लक्ष्मीजी और सरस्वतीजी के पूजन का उद्देश्य

शरद पूर्णिमा पर दमा मिटानेवाली प्रभावकारी औषधि का लाभ लें २५

शरद पूर्णिमा : ९ अक्टूबर

दसों इन्द्रियों पर विजय पाने का पर्व

विजयादशमी : ५ अक्टूबर



महानता
एवं

सफलता
का रहस्य



आत्मविश्वास का अर्थ है अपने आत्मस्वरूप में विश्वास, अपने चैतन्यस्वरूप शुद्ध 'मैं' में विश्वास। शरीर, मन या बुद्धि को मैं मानकर उसमें किया गया विश्वास आत्मविश्वास नहीं कहलाता।

आत्मविश्वास - यही महानता का एकमात्र रहस्य है। संसार का इतिहास उन थोड़े से व्यक्तियों का इतिहास है जिनमें आत्मविश्वास था। यह विश्वास अंतःस्थित देवत्व को ललकारकर प्रकट कर देता है। तब व्यक्ति कुछ भी कर सकता है, सर्वसमर्थ हो जाता है।

यदि ३३ कोटि देवताओं पर तुम्हारी श्रद्धा हो और अपने-आप पर श्रद्धा न हो तो तुम कदापि मोक्ष के अधिकारी नहीं हो सकते। लोग कहते हैं कि 'इस पर विश्वास करो, उस पर विश्वास करो...' पर आप पहले अपने आत्मा पर विश्वास करो।

जो आत्मविश्वास नहीं रखता वही नास्तिक है। जिस क्षण व्यक्ति आत्मविश्वास खो देता है उसी क्षण उसकी मृत्यु आ जाती है। यह कभी न सोचना कि आत्मा के लिए कुछ भी असम्भव है। ऐसा सोचना ही भयानक नास्तिकता है। याद रखो कि तुम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हो। तुम जो कुछ बल या सहायता चाहो सब तुम्हारे भीतर ही विद्यमान है। अतः अपने-आप पर श्रद्धा करना सीखो। इसी आत्मश्रद्धा के बल पर अपने पैरों पर खड़े हो जाओ और शक्तिशाली बनो।

उठो ! जागो ! और अपने चरम लक्ष्य (आत्मसाक्षात्कार) को प्राप्त करो। सिंह-गर्जन के साथ आत्मा की महिमा घोषित करो।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।

'उठो, जागो ! (सावधान हो जाओ और) श्रेष्ठ (ब्रह्मवेत्ता) महापुरुषों को पाकर, उनके पास जा के (उनके द्वारा) उस परब्रह्म-परमेश्वर को जान लो।'

आत्मविश्वास का आदर्श ही हमारी सबसे अधिक सहायता कर सकता है। यदि इस आत्मविश्वास का और भी व्यापक रूप से प्रचार होता और यह कार्यरूप में परिणत हो जाता तो जगत में जितने दुःख तथा बुराइयाँ हैं उनका अधिकांश भाग लुप्त हो जाता। मानव-जाति के समग्र इतिहास में सभी महान स्त्री-पुरुषों में यदि कोई प्रेरणा सर्वाधिक सशक्त रही है तो वह आत्मविश्वास ही है।

अनंत ब्रह्म हमारी समग्र शक्तियों तथा बल का भंडार है और हम उससे चाहे जितनी शक्ति संग्रहित कर सकते हैं। इसलिए अपने आत्मा पर यानी अपने-आप पर विश्वास करो।

लोक कल्याण सेतु

मासिक
समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २६ अंक : ३ (निरंतर अंक : ३०३)
प्रकाशन दिनांक : १५ सितम्बर २०२२ मूल्य : ₹ ४.५०
पृष्ठ संख्या : २६ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक और मुद्रक :

राकेशसिंह आर. चंदेल

प्रकाशन-स्थल :

संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत
श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५
(गुजरात)

मुद्रण-स्थल :

हरि ॐ मैनुफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों,
पाँटा साहिब, सिरमौर,
(हि.प्र.) - १७३०२५.

सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

सम्पर्क पता :

'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री
आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू
आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

* Email: lokkalyansetu@ashram.org,
ashramindia@ashram.org
* Website: www.lokkalyansetu.org
www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना
पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष
मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम
अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक
कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

| भारत में : | | विदेशों में : | |
|-------------------|-------|------------------|-----------|
| (१) वार्षिक : | ₹ ४५ | (१) पंचवार्षिक : | US \$ ५० |
| (२) द्विवार्षिक : | ₹ ८० | (२) आजीवन : | US \$ १२५ |
| (३) पंचवार्षिक : | ₹ १९५ | | |
| (४) आजीवन : | ₹ ४७५ | | |

- ऐसी दिवाली मनाओ तो आपका काम बन जाय !..... ४
- श्रद्धा व गुरुनिष्ठा की मूर्ति : माँ महँगीबाजी..... ६
- कैसे मिटे अहं, कैसे मिले परमात्मा ? ७
- वे स्वयं भगवत्स्वरूप हो जाते हैं
- संत तुकारामजी..... ८
- समस्याएँ अनेक, समाधान एक !..... ९
- हाथी बड़ा या मनुष्य ? १०
- मन से भी गुरु मानें तो बापूजी हैं पूरा निभाते
- विजया शर्मा..... १२
- गुरु ने हमें अपनाया कब ? १३
- शिक्षा कैसी हो ? - महात्मा गांधी..... १६
- क्यों गुणकारी है भाद्रपद माह का
दूध, मक्खन, घी ? १७
- स्वादिष्ट व पौष्टिक सीताफल..... १८
- शरद पूर्णिमा पर दमा मिटानेवाली
प्रभावकारी औषधि का लाभ लें..... २०
- एक ऐतिहासिक सफर... नर्मदापुर से
नर्मदापुरम् तक..... २३
- क्या आप लालबुझक्कड़ के पड़ोसी नहीं हैं ? २५

* 'अनादि' चैनल टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न
केबलों पर उपलब्ध है।
* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर
उपलब्ध है। * 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

* विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग *

सेवाकार्य



रोज सुबह ६:३० व
रात्रि ११ बजे



रोज सुबह ७:३० व
रात्रि ८:३० बजे



रोज रात्रि १०-०० बजे

Mangalmay Digital



Asharamji Bapu



Asharamji Ashram



आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

दीपावली पर्व :

२२ से २६

अक्टूबर



ऐसी दिवाली मनाओ

तो आपका काम बन जाय !

- पूज्य बापूजी

ऐसी मिठाई खाओ

संत भोले बाबा ने वेदांत छंदावली में लिखा है :

सलोनी, सुहानी, रसीली मिठाई ।

वसिष्ठादि हलवाइयों की बनाई ॥...

...मनावें सभी नित्य ऐसी दिवाली ।

हमारी मनी आज जैसी दिवाली ॥

आप ऐसी दिवाली मनाओ जो आपको रसमय बनाये । ऐसी मिठाई खाओ जो वसिष्ठजी, वेदव्यासजी, साँई श्री लीलाशाहजी बापू, रमण महर्षिजी आदि हलवाइयों ने बनायी है । इन हलवाइयों की मिठाई तगड़ी है ! इन महापुरुषों ने जो अंतरात्मा की तृप्ति की दिशा बतायी, मीठी समझ दी, मीठा मार्गदर्शन दिया वह आत्म-

प्रसादरूपी मिठाई खाकर फिर बाहर की मिठाई जीभ पर रखोगे । बाहर की मिठाई (प्रसादरूप में) अपन भी बाँटेंगे लेकिन शाश्वत मिठाई (आत्म-प्रसाद) का लक्ष्य रखकर जो गुरुद्वार या मंदिरों में जाते हैं उन्हें सूक्ष्म दृष्टिसम्पन्न होकर आधिभौतिक में से आत्मलाभ पाने की कोशिश करनी चाहिए । जैसे मिठाई आधिभौतिक है, उसे सत्संग आदि करके और भाव शुद्ध करके लेते-देते हैं तो उसका आध्यात्मिकीकरण हो जाता है अर्थात् स्थूल वस्तु का सूक्ष्म, ऊँचा लाभ हो जाता है ।

तुम अपने घर में तो दीया जलाते हो, कभी अड़ोस-पड़ोस में भी जलाकर आओ, दूसरे के अंतःकरण में भी उल्लास भर दो । जैसा आप देते हैं

हाथी बड़ा

या मनुष्य ?

- पूज्य बापूजी



एक हाथी मरकर यमपुरी पहुँचा। फुरसत के समय विनोद तो सभीको चाहिए, यमराज को सूझा विनोद, बोले : “अरे ! इतना बड़ा प्राणी हाथी, धरती पर गया और कुछ बड़ा काम नहीं करके आया। अभागे ! वही जन्म-मरण... !”

हाथी : “मेरे से बड़ा तो मनुष्य है।”

यमराज : “क्या खाक बड़ा है ! तेरे एक पैर को तराजू में रखें तो चार मनुष्य तुल जायेंगे।”

“महाराज ! शरीर से नहीं लेकिन विवेक से, सामर्थ्य से, युक्ति से मनुष्य बहुत बड़ा है।”

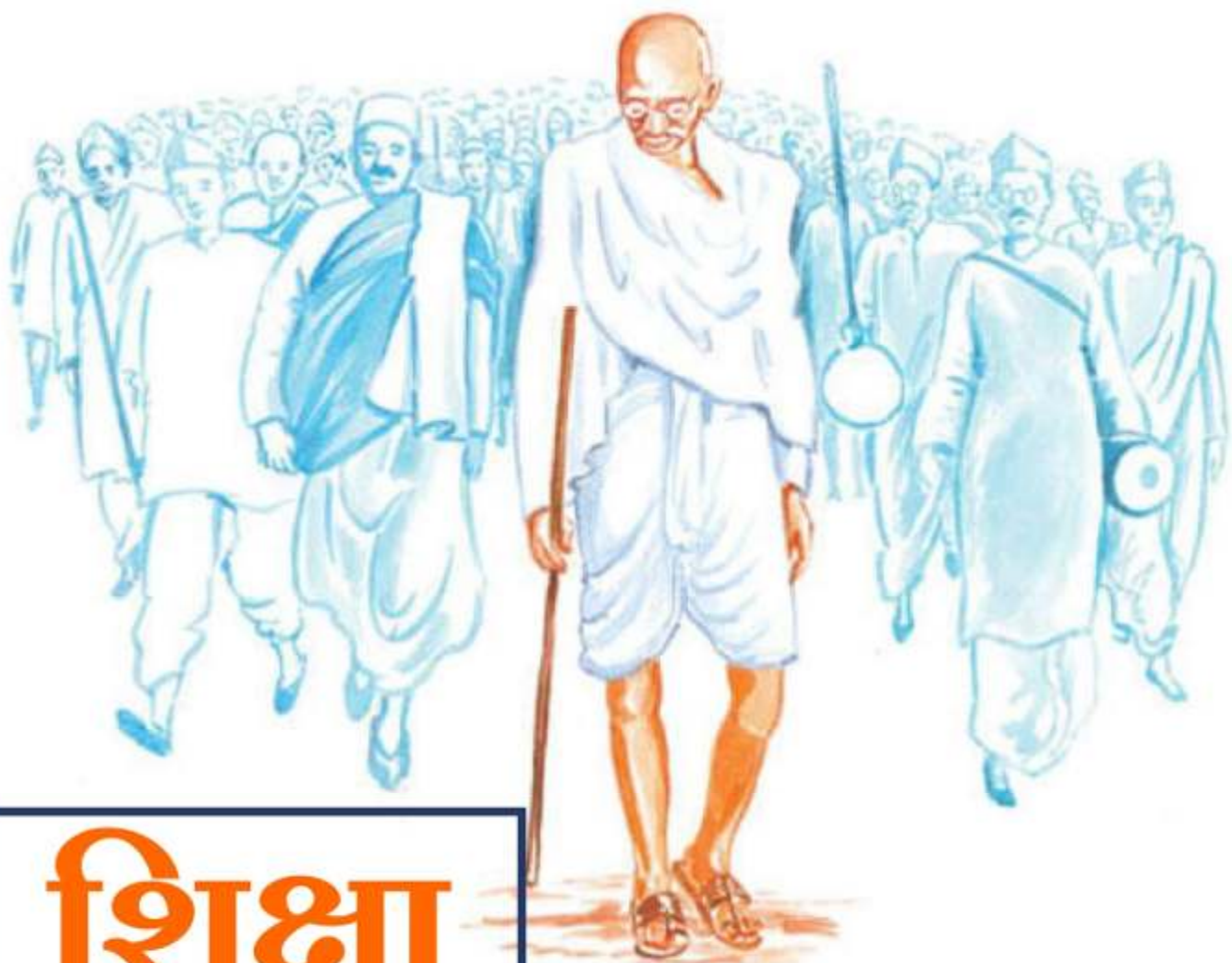
“क्या बड़ा है ! कई मनुष्य इधर आते हैं ‘इतने से’।”

“महाराज ! जिंदे मनुष्य से आपका पाला नहीं

पड़ा है, यहाँ तो मरकर आते हैं। कोई जिंदा मनुष्य बुलवाओ तो पता चले कि जिंदा मनुष्य कैसा नाक में दम कर देता है।”

यमराज को न जाने क्या सूझा, किसी खास सेवक को बोले कि “धरती पर जाना, मौका पाकर किसी मनुष्य को अवैधानिक रूप से उठा के ले आना। घर में से नहीं, खेत-खलियान में कहीं सोता हो तो उठा के ले आना जिंदा।”

अब किसान लोग तो बेचारे खेत-खलियान में सोते हैं। एक किसान युवक खटिया पर सोया था खेत में। रात्रि को यमदूत आये, उठायी खटिया और चल दिये यमपुरी की तरफ। ऊपर की ठंडी हवा लगी तो वह थरथराया। आँख खुली तो देखा



शिक्षा कैसी हो ?

- महात्मा गांधी

(महात्मा गांधी जयंती : २ अक्टूबर)

यह शिक्षा अधूरी है

शिक्षा से मेरा अभिप्राय यह है कि बालक या प्रौढ़ की शरीर, मन तथा आत्मा की उत्तम क्षमताओं को उद्घाटित (अनावृत) किया जाय और बाहर प्रकाश में लाया जाय। अक्षर-ज्ञान न तो शिक्षा का अंतिम लक्ष्य है और न उसका आरम्भ। वह तो मनुष्य की शिक्षा के कई साधनों में से केवल एक साधन है। अक्षर-ज्ञान अपने-आपमें शिक्षा नहीं है। इसलिए हम बच्चों को कोई

उपयोगी उद्योग सिखायें और उसके द्वारा उनकी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास सिद्ध करें।

जो चित्त की शुद्धि न करे, मन और इन्द्रियों को वश में रखना न सिखाये, निर्भयता और स्वावलम्बन पैदा न करे, निर्वाह के साधन न बताये और गुलामी से छूटने एवं आजाद रहने का हौसला न उपजाये, उस शिक्षा में चाहे जितना भी जानकारी का खजाना, तार्किक कुशलता और

श्वादिष्ट
व पौष्टिक

सीताफल



मनोहर सुगंध व अत्यंत मीठे स्वाद से संयुक्त एवं पोषक तत्वों से भरपूर सीताफल शीतलताप्रद, पित्त व वायु शामक होने से शरद ऋतु (२३ अगस्त से २२ अक्टूबर) में होनेवाली गर्मी-संबंधी समस्याओं, जैसे शरीर की जलन, अम्लपित्त (hyperacidity), मासिक धर्म की अधिकता आदि में तथा पित्त-प्रकृतिवालों के लिए अत्यंत गुणकारी फल है।

यह बल, मांस एवं वीर्य वर्धक, तृप्ति व प्रसन्नता देनेवाला एवं शरीर को पुष्ट करनेवाला है। जो कमजोर व दुबले-पतले हों उन्हें इसका सेवन अवश्य करना चाहिए।

ऊर्जा एवं प्राकृतिक शर्करा का अच्छा स्रोत होने से इसके सेवन से शरीर में शीघ्र ही शक्ति का संचार होता है तथा शरीर को लम्बे समय तक

ऊर्जा मिलती रहती है। कमजोरी के कारण आनेवाली थकान एवं मांसपेशियों की दुर्बलता में इसका सेवन विशेष

लाभकारी है।

सीताफल में काफी मात्रा में रेशे (fibres) होते हैं जो पाचन-तंत्र को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं। यह हृदय को बल देनेवाला है, साथ ही पोटैशियम एवं मैग्नेशियम का अच्छा स्रोत है जो उच्च रक्तचाप (high B.P.) एवं हृदय-संबंधी रोगों से रक्षा करते हैं। इसमें फ्लेवोनोइड्स पाये जाते हैं जो रोगप्रतिरोधक शक्ति को बनाये रखते हैं, साथ ही कैंसर से लड़ने में मदद करते हैं। विटामिन 'सी' की प्रचुरता के कारण यह शरीर की रोगप्रतिकारक शक्ति (immunity) को बढ़ाकर भविष्य में होनेवाले सम्भावित रोगों से सुरक्षा करता है। लौह

अंत्येष्टि संस्कार

क्यों ?

हिन्दू संस्कृति में श्दवाँ संस्कार

(गतांक से आगे)

मरने की कला सीख लो !

जीवन जीना एक कला है तो मरना भी एक कला है। पूज्य बापूजी कहते हैं : मृत्यु तो आनेवाली है, मृत्यु का तो महाताप है। जीवनभर जिसको सँभाला, जिसको अपना माना, जिसको 'मैं' माना वही कमबख्त शरीर मर रहा है। मरना पड़ेगा तो मरने की रीत अभी से सीख लो। मरना कैसे चाहिए यह भारतीय संस्कृति सिखाती है कि बेटा ! जब लगे कि अब मरने के दिन आ रहे हैं अथवा बीमारी है तो मित्रों से मिल लो, राम-राम कर लो : "भाई ! मन दुखा हो तो मुझे माफ कर देना, मेरा आपसे लेना-देना माफ है और आपका मेरे से लेना-देना हो तो माफ कर देना।"

जब मेरे पिताजी के संसार से जाने के दिन आये उस समय की बात है। प्रातः के ३ बजे थे, बोले : "जेठे की माँ ! ओ जेठे की माँ !..."

मेरे पिता शेर जैसे थे और मेरी माँ बेचारी गाय जैसी... पतिपरायणा थी। माँ को बोले : "जेठे (मेरे बड़े भाई) को उठा। आसुमल को नहीं जगाना, वह अभी बच्चा है। गाय के गोबर का लेपन करो, उस जगह पर मेरे को सुलाओ।"

माँ : "यह क्या बोलते हो ?"

"ज्यादा बात नहीं कर, जल्दी कर। लेपन करके मेरे को सुला।"

मेरे भाई और माँ ने उनको उतार के लेपनवाली जगह पर सुला दिया।

फिर बोले : "तुलसी के पत्ते सूरज उगने के पहले नहीं तोड़े जाते तो द्राक्ष का पानी बनाओ, मेरे मुँह में वह पानी डालो। और जेठा ! तू गीता पढ़।"

जो पक्षियों को दाना देते रहते हैं न, उनको मृत्यु का समय पता चल जाता है। पिताजी पक्षियों को दाना देते थे, उसका यह प्रभाव था।

मेरा भाई गीता पढ़ने लगा। एकाएक शेर (पिताजी) ने गाय (माँ) के आगे हाथ जोड़े : "जेठे की माँ ! तू मेरे को माफ कर दे।"

माँ : "आप क्या कह रहे हो ! क्यों माफी माँग रहे हैं ?"

"जीवन में कई बार मैंने तेरे को न कहने जैसा कहा है, हाथ भी उठाया है। अब तू माफ कर दे, नहीं तो लेन-देन पूरा करने के लिए मैं फिर कुछ बनूँगा। एक-दूसरे से लेने-देने का चक्कर चलता रहेगा। तू बोल दे न, कि माफ किया।"

माँ ने कहा : "मेरे से भी तो गलती हो जाती थी। आप भी मेरे को माफ कर दीजिये।"

परम मंगलमय सत्साहित्य-संग्रह



संग्रह का मूल्य : ₹ ६० (डाक खर्च सहित)

इस संग्रह में आप पायेंगे : * आपका परम मंगल और पूर्ण कल्याण किसमें है ? * कार्य को सफल बनाने की युक्तियाँ * सच्ची विजय क्या है, उसे कैसे पायें ? * हररोज दिवाली, हरक्षण दिवाली कैसे मनायें ? * परोपकार ही परम धर्म है * मन को जीतने की युक्तियाँ * भगवान किस पर ज्यादा प्रसन्न रहते हैं ? * महापुरुषों के प्रेरणात्मक जीवन-प्रसंग

रसता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य, पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

निरापद वटी

यह संक्रमण का नाश कर तद्जन्य बुखार, कफ, खाँसी, कमजोरी आदि लक्षणों से शीघ्र राहत दिलाती है। संक्रमण के प्रभाव से आनेवाली कमजोरी को दूर करने में सहायक है।



सुरक्षा वटी

यह वटी रोगप्रतिकारक क्षमता बढ़ाकर सर्दी, जुकाम, बुखार आदि संक्रमणजन्य रोगों से सुरक्षा करती है। पाचनशक्ति बढ़ाकर साररूप सप्तधातुओं के निर्माण में मदद करती है। संक्रामक रोग होने पर इसके सेवन से शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ होता है।



दंत सुरक्षा दूधपेस्ट

यह आपके दाँतों को सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता है। दाँतों को साफ करता है एवं मसूड़ों को मजबूत रखता है। इसका सप्ताह - दो सप्ताह उपयोग करने से मसूड़ों की सूजन, मसूड़ों से खून निकलना, दाँतों का दर्द, दाँतों का हिलना, दाँतों की सड़न आदि दंत-रोगों से रक्षा होती है।



आँवला भृंगराज केश तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, रूसी, सिरदर्द, मस्तिष्क की कमजोरी आदि समस्याओं को दूर करता है। बालों की जड़ों को मजबूत करता है व उनको बढ़ाकर उनमें चमक लाता है। दिमाग को ठंडा रखता है व स्मरणशक्ति को बढ़ाता है।



आपके परिवार की उत्तम सेहत के लिए गुणकारी होमियोपैथिक औषधियाँ

होमियो फेमिटैब्स

यह मासिक धर्म का न आना या दर्द के साथ होना, श्वेतप्रदर, गर्भाशय की विकृति या अन्य कारणों से उत्पन्न होनेवाले बाँझपन आदि को दूर करके गर्भाशय को सशक्त कर गर्भाधान में सहयोग करता है।



होमियो लीवर केअर लीवर टॉनिक

यह पीलिया, यकृत (liver) का बढ़ना या सिकुड़ना तथा यकृत की अन्य अधिकतर समस्याओं को आसानी से हल करता है।



होमियो एडिक्ट केअर

यह तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट तथा शराब आदि नशीले पदार्थों के दुर्व्यसन की लत को छुड़ाकर दुर्व्यसन से आधी शारीरिक कमजोरी को दूर करने हेतु एक उत्तम टॉनिक है।



उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramstore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramstore.com



अन्याय बंद हो, निर्दोष बापूजी की शीघ्र रिहाई हो !

३१ अगस्त को देशभर में निकली रैलियाँ, साँपे गये ज्ञापन

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023
LWPP No. PMG/NG/045/2021-2023
(Issued by PMG GUJ. valid upto 31-12-2023)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month



'योग व उच्च संस्कार शिक्षा' की सरिता द्वारा सुसंस्कारित होते विद्यार्थी



लोक कल्याण सेतु के योगयात्रा विशेषांक से समाज को मिल रही दिव्य जीवन की दिशा



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम प्रकाशक और मुद्रक : राकेशसिंह आर. चंदेल प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) मुद्रण-स्थल : हरि ३० मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतगलियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी